दादा भगवान परिवार का

फरवरी २०२५

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

पिछले अंक में हमने 'दान' के बारे में समझ प्राप्त की। साथ ही, त्विशा, अंबिक और शौर्य को ट्रेज़र हन्ट के खेल में क्लू सॉल्व करने में मदद भी की। लेकिन अभी तक न तो कोई खज़ाना उनके हाथ लगा है और न ही हम यह समझ पाए हैं कि खज़ाने का दान के साथ क्या लेना-देना है।

इस अंक में हम देखेंगे कि आखिर में त्विशा, अंबिक और शौर्य को कौनसा खज़ाना मिलता है। साथ ही, जानेंगे एक ऐसे 'अल्टिमेट' यानी कि सर्वश्रेष्ठ गिफ्ट के बारे में, जिसकी कीमत इस दुनिया के सभी गिफ्ट्स से अधिक है। तो आप खेल को आगे बढ़ाकर क्लू को सॉल्व करने के लिए तैयार हो न?

February, 2025
Year 12, Issue : 11
Conti. Issue No.: 143
Published Monthly

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोनः ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2025, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

अक्रम
एक्सप्रेस

दादाजी क़हते हैं...

आपको सिर्फ भावना करनी है कि मुझसे किसी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो। ऐसा आपने तय किया होगा तो उसे दुःख होगा ही नहीं। इसलिए आपको तय करना चाहिए।

आपने लोगों को दुःख दिया न, इसलिए उसके फलस्वरूप आपको दुःख मिलेगा। लोगों को सुख दोगे तो आपको सुख मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : किसी को दुःख दिया हो तो हमें दुःख होगा?

दादाश्री : दुःख तो होगा ही, जबरदस्त। किसी को किंचित्मात्र दुःख नहीं होना चाहिए। मैं जब अठारह-बीस साल का था तब सिनेमा देखने जाता था। बूट (चलते समय) आवाज़ करते थे। कुत्ता डर न जाए इसलिए मैं गली के अंदर

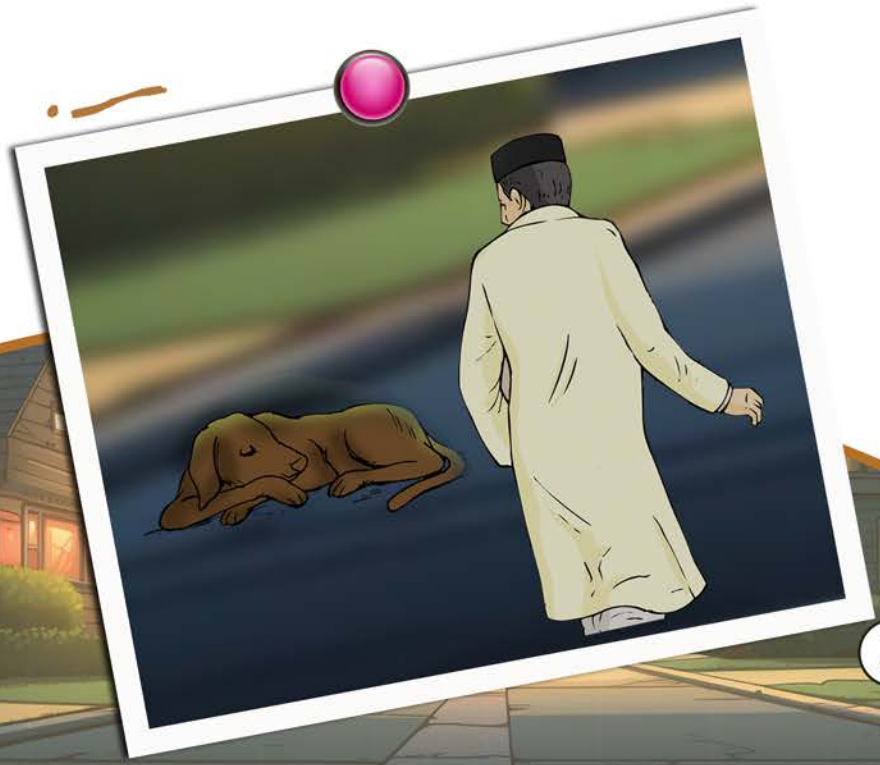

आने से पहले ही बूट निकाल कर हाथ में ले लेता था। कुत्ता बेचारा चौंककर इधर-उधर देखे, तो चौंकने से उसे कितना दुःख होगा! अतः बूट निकालकर घर आता था। किसी को दुःख नहीं हो, उस तरह जीवन जीना चाहिए। किसी को भी दुःख कैसे दे सकते हैं? किसी को दुःख होने का मतलब खुद को ही हुआ है। फिर भी अनजाने में हो चुके हों, उनकी माफी माँगते रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आपने कुत्ते की जो बात की कि 'कुत्ता डर न जाए इसलिए आप बूट निकालकर जाते थे', तो ऐसा हर एक व्यक्ति के साथ कैसे अभयदान का ध्यान रखें ताकि वह हमसे डरे नहीं?

दादाश्री : आपने तय किया होगा तो कैसे डरेगा? खुद तय करे कि मेरे से किसी को भी किंचित्मात्र दुःख न हो। थोड़े समय के लिए कुछ झंझट हो सकती है, कभी-कभी। उसके बाद सब बंद हो जाता है। वह होगा ही नहीं। आपके द्वारा पक्का डिसिज़न (निर्णय) लेने के बाद नहीं होता है।

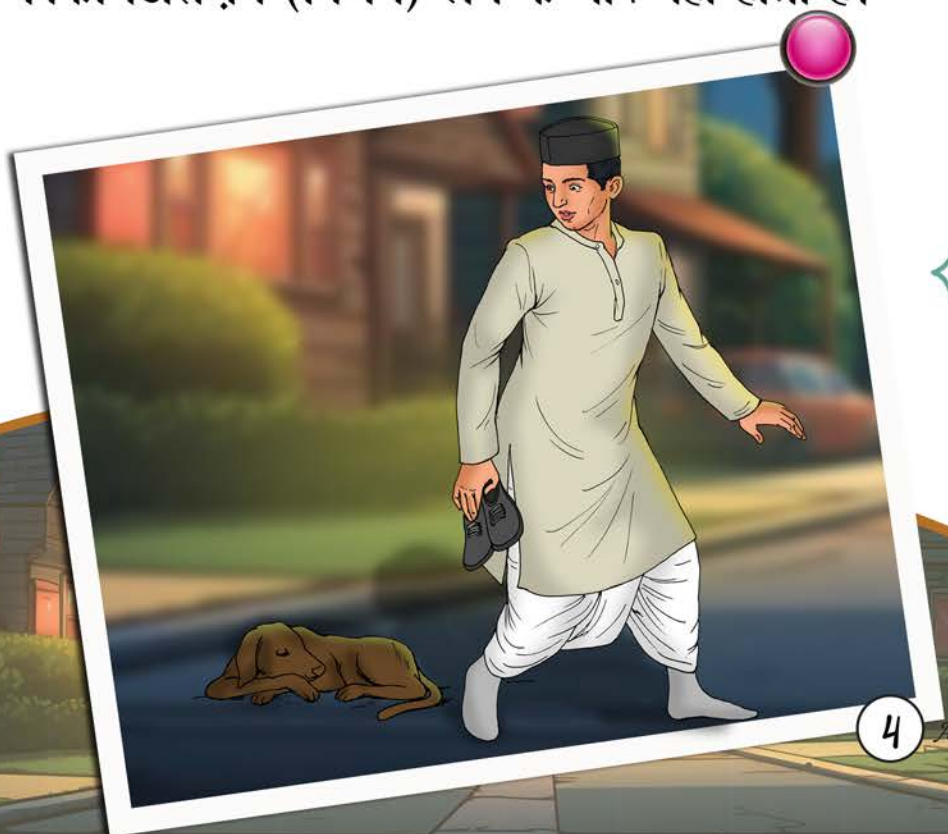

पिछले अंक में हमने देखा कि त्विशा, अंबिक और शौर्य खज़ाने की खोज में मिस्टर मनोज पारिख के 'टीले वाले घर' पर आ पहुँचे। लेकिन वहाँ जाकर उलझ गए। क्या उन्होंने क्लू समझने में कोई गलती की थी? या फिर वहाँ कोई दूसरा क्लू छिपा हुआ था? चलो, देखते हैं आगे क्या हुआ...

'पिछला क्लू हमें यहाँ तक लाया। तो नेक्स्ट क्लू भी यहीं आसपास ही होना चाहिए।' अंबिक ने नजर घुमाते हुए कहा।

"हो सकता है कि हमें कोई गलतफहमी हुई हो और 'टीले पर

बना घर' वाला क्लू खज़ाने की तरफ नहीं ले जाता हो।" त्विशा ने कहा।

तभी शौर्य की नज़र घास में छिपे हुए एक निशान की ओर गई। हरी स्याही से बना निशान किसी दिशा की तरफ पॉइन्ट कर रहा था।

'फ्रेन्ड्स, दिशा तो मिल गई। लेकिन नक्शा?' शौर्य ने कहा।

तभी अंबिक ने निशान के नीचे छिपा हुआ एक कागज़ निकाला। जिसमें एक भूल-भुलैया बनी हुई थी।

'यानी कि इस दिशा में एक भूल-भुलैया है। और उसमें से बाहर निकलेंगे तो हमें हमारा खज़ाना मिल जाएगा!' त्विशा खुश होकर बोली।

रास्ता खोजो

अंबिक, त्विशा और शौर्य को आगे बढ़ने के लिए सही रास्ता खोजने में मदद कीजिए ।

जैसे ही तीनों भूल-भुलैया से बाहर निकले, त्विशा उत्साह में आकर दौड़ने लगी और गिर गई। उसके पैर में मोच आ गई। वह बहुत मुश्किल से खड़ी हुई और फिर बैठ गई।

तभी अंबिक ने कहा, "गाड़ी बिगड़ी भी तो गैरेज के पास ही! सामने देखो 'वी-केयर हेल्थ सेन्टर'। चलो, अंदर जाकर त्विशा की मरहम पट्टी करवाते हैं। क्या पता हमारा खज़ाना भी अंदर ही हो!"

'अंबिक, मुझे इतना दर्द हो रहा है और तुम्हें खज़ाने की पड़ी है!' त्विशा लंगड़ा कर चलने लगी।

हेल्थ सेन्टर में प्रवेश करते ही कुछ देर के लिए त्विशा अपना दुःख भूल गई। वहाँ के वातावरण में गजब की शांति थी। एक नर्स ने आकर त्विशा के पैर की जाँच की और उसे एक रूम में ले गई। अंबिक और शौर्य रूम के बाहर ही रुके।

त्विशा की नज़र रूम की दीवार पर लगे हुए एक फोटो पर पड़ी। त्विशा को लगा कि इतना जीवंत फोटो तो उसने कभी किसी का नहीं देखा। उसे लगा कि मानो फोटो अभी उसके साथ बात करने लगेगा।

'ये कौन हैं?' त्विशा ने नर्स से पूछा।

'हमारी अम्माजी, हम सबकी

मदर और इस हेल्थ सेन्टर की स्थापक।' नर्स ने फोटो के सामने देखकर स्माइल करते हुए कहा।

'मुझे इनसे मिलना है।' त्विशा को फोटो की तरफ एक अलग ही खिंचाव महसूस हुआ।

'मिलने का अवसर तो मुझे भी नहीं मिला। अम्माजी को गुजरे हुए कई साल हो गए। लेकिन उनके जीवन के प्रसंगों को सुनकर मुझे कभी ऐसा लगा ही नहीं कि मैं उनसे नहीं मिली हूँ।' नर्स ने कहा।

'मुझे एकाध प्रसंग बताओगे?' त्विशा ने पूछा।

'हाँ-हाँ, क्यों नहीं। इस हेल्थ सेन्टर के निर्माण के पीछे क्या घटना थी वह मैं तुमको बताती हूँ।' नर्स ने त्विशा के पैर में पट्टी बाँधते हुए कहा।

'एक सेकन्ड... मैं अपने मित्रों को भी बुला लेती हूँ।' ऐसा कहकर त्विशा ने आवाज लगाकर शौर्य और अंबिक को रूम में बुलाया और कहा, 'एक कहानी हमारी राह देख रही है...'

कैस्पिड डिज़ीज़

'कैस्पिड के केसेस दिन पर दिन बढ़ते जा रहे हैं। युवा हो या बुजुर्ग, कैस्पिड की बीमारी ने सभी को अपने शिकंजे में जकड़ लिया है। बचने के लिए सावधानी बरतना बहुत ज़रूरी है।' आशा ने घबराकर टी.वी. बंद कर दिया। उसके दिल की धड़कनें तेज हो गई।

एक अलमारी में से थर्मामीटर निकाल कर बुखार नापा। वैसे भी उसे सुबह से तबियत थोड़ी नरम लग रही थी। लेकिन टेम्परेचर नॉर्मल था।

'चलो,अच्छा है!' उसने एक गहरी साँस ली और

अपना मोबाइल ढूँढ़ने लगी। कहाँ रख दिया? मोबाइल मिलते ही उसने तुरंत ही नंबर डायल किया।

'हेलो, सूरज।'

'हाँ मम्मी, बोलो।'

'बेटा, अगर कैस्पिड की दवा मिल रही हो तो लेते आना न।'

'मम्मी, बाजार में दवा की कमी हो गई है। सरकार ने सिर्फ कैस्पिड के मरीजों को ही दवा खरीदने की अनुमति दी है।'

आशा कुछ कह नहीं सकी।

'मम्मी, आपकी तबियत तो अच्छी है न?'

'हाँ, वह तो अच्छी है।'

'तो ठीक है, मैं फोन रखता हूँ।'

फोन रखकर आशा ने फिर से बुखार नापा। बुखार नहीं था। लेकिन उसे क्यों अच्छा नहीं लग रहा था? शाम हुई। सूरज ने घर आकर तुरंत ही मम्मी के हाथ में एक पैकेट दिया।

'ओह, वह वाली दवा! तुम्हें कैसे मिली?' आशा ने पैकेट खोलकर देखा।

'हाँ, अब ज्यादा कुछ मत पूछना। दवा को फ्रीज में रखना है।'

बस, दवा हाथ में आते ही आशा को लगा कि उसकी तबियत ठीक हो गई। कई दिनों बाद उस रात आशा ने ठीक से खाना खाया। दूसरे दिन सुबह खाँसी की आवाज़ से आशा और सूरज की आँख खुल गई।

'लगता है कि सुषमा आन्टी के घर पर किसी की तबियत खराब हो गई है।' सूरज ने कहा।

आशा ने तुरंत ही अपने पड़ोसी सुषमा बहन को फोन लगाया।

'सुषमा, घर पर सबकी तबियत तो ठीक है न?' आशा ने पूछा।

'मयंक को कैस्पिड हो गया है, आशा। और दवा कहीं भी नहीं मिल रही है। अब मैं क्या करूँगी?' सुषमा

बहन फूट-फूटकर रोने लगीं।

'तुम चिंता मत करो। हमारा बच्चा मयंक ठीक हो जाएगा।' ऐसा आश्वासन देकर आशा ने फोन रख दिया

उसने तुरंत ही फ्रिज में से दवा का पैकेट बाहर निकाला। सूरज के हाथ में रखते हुए बोली, 'सुषमा आन्टी के घर के बाहर दवा रख दोगे?'

सूरज ने मम्मी की ओर इस तरह देखा मानो मम्मी ने उसके मन की बात ही कह दी हो। उसने तुरंत मम्मी का कहना माना।

नर्स ने त्विशा के पैर की पट्टी में गाँठ बाँधते हुए कहा, "इस कहानी के आशा बहन यानी कि 'वी-केयर हेल्थ सेन्टर' के अम्माजी। इस घटना के कुछ ही महीनों

बाद आशा बहन का बहुत बुरा ऐक्सिडन्ट हुआ। लेकिन वे चमत्कारिक ढंग से बच गईं। उन्हें लगा कि उन्होंने अपनी सेफ्टी का विचार किए बिना कैस्पिड की दवा किसी और को देकर जान बचाई थी, इसीलिए ही आज उनकी जान बच गई। और उसके बाद उन्होंने फैसला किया कि वे एक ऐसा हेल्थ सेन्टर खोलेंगी, जहाँ सभी मरीज़ों को बेस्ट उपचार और बेस्ट दवा मिल सके।"

बच्चे कहानी से बहुत प्रभावित हुए।

नर्स ने त्विशा के पैर को हल्के से थपथपाया और कहा, 'बस, पैर को थोड़ा आराम देना और जल्दी ही तुम फिर से दौड़ने लगोगी।'

तभी एक व्यक्ति वहाँ आया और कहा, 'कुछ एक एरिया में बस की हड़ताल होने के कारण आज स्टाफ के बहुत लोग नहीं आ पाए हैं। स्टोरेज रूम से कुछ चीज़ें मँगवानी हैं। क्या आप किसी को भेज दोगी?'

त्विशा ने तुरंत ही नर्स से पूछा, 'मैम, क्या हम जाकर ले आएँ?'

नर्स ने खुश होकर 'हाँ' कहा और उसके हाथ में लिस्ट दे दी।

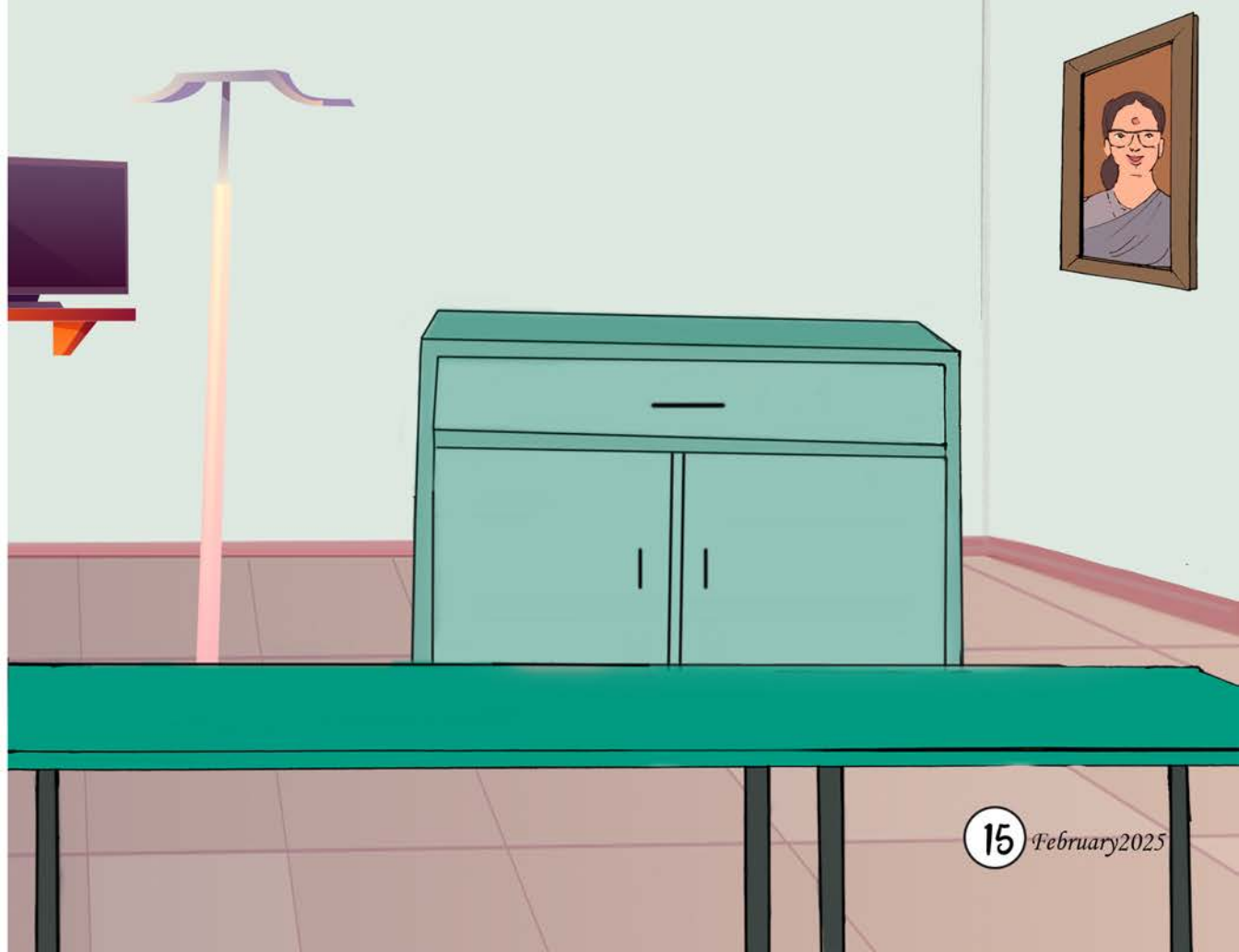

चीजें ढूँढिए

अंबिक, त्विशा, शौर्य को फोटो के अनुसार चीज़ें ढूँढने में मदद कीजिए। और चीज़ों की गिनती करके नीचे दिए गए बोक्स में लीखिए।

हेल्थ सेन्टर में छोटी सी मदद करके तीनों को बहुत संतोष मिला। लेकिन, खज़ाने की खोज तो अभी बाकी थी।

'ज़रूर यहाँ कोई क्लू होना चाहिए।' अंबिक बोला।

'कोई डाकू भला हेल्थ केयर सेन्टर में क्लू क्यों रखेगा?!' शौर्य को लगा अंबिक की बात में कोई दम नहीं है।

'लेकिन भूल-भुलैया के छोर पर तो यही बिल्डिंग थी। इसलिए आसपास कुछ तो होना ही चाहिए।' त्विशा ने कहा।

तीनों ने आसपास क्लू ढूँढ़ने का बहुत प्रयास किया। लेकिन कहीं कुछ नहीं मिला। अंत में, वे हार मानने ही वाले थे कि अंबिक की नज़र ड्रिंकिंग वॉटर स्पेस पर गई। वहाँ सभी टाइल्स नई थीं। लेकिन एक पुरानी टाइल के पीछे उसे एक कागज़ छुपा हुआ दिखाई दिया। उसने तुरंत ही त्विशा और शौर्य को बुलाया। तीनों ने फटाफट

कागज़ खोला। उसमें एक नक्शा था और हरी स्याही से एक जगह पर सर्कल बना हुआ था।

'यह कौन सी जगह हो सकती है?' तीनों ध्यान से नक्शे को देख रहे थे।

'वॉट?! यह तो असंभव है!' शौर्य ने कहा।

'क्या हुआ? तुमको पता चल गया?' त्विशा ने पूछा।

'अरे, यह तो कैम्प ग्राउन्ड का नक्शा है। और ग्राउन्ड के पीछे जो राजा प्रतापसिंह की मूर्ती है न, उस पर सर्कल किया हुआ है।' शौर्य ने बताया।

'अरे, हाँ!' अंबिक बोला। तीनों ने एक-दूसरे के सामने देखा और फिर एक साथ बोल पड़े, 'फटाफट चलते हैं।'

अँधेरा होने से पहले तीनों कैम्प ग्राउन्ड पहुँच गए और कैम्प में किसी का ध्यान उनकी और न जाए इस तरह राजा प्रतापसिंह

की मूर्ति के पास पहुँचे। राजा प्रतापसिंह की उँगलियों के बीच एक कागज़ था।

त्विशा ने कागज़ निकालकर खोला। हरी स्याही से लिखा हुआ एक पत्र था।

'प्रिय बच्चों,

यदि यह पत्र आपके हाथ लगा है तो मुझे विश्वास है कि आपने मेरे रखे हुए अन्य क्लूज़ भी इकट्ठे किए ही होंगे। आपको लग रहा होगा कि खज़ाना कहाँ है? और मुझे लगता है कि आपको बहुत सारे खज़ाने मिल चुके हैं। फ्रेन्ड्स, कभी-कभी मंजिल पर पहुँचने से पहले जर्नी यानी कि सफर में किए हुए अनुभवों की कीमत अधिक होती है। अभी भी एक खज़ाना आपकी राह देख रहा है। मुझे विश्वास है कि अब आप उसके पीछे नहीं जाओगे। लेकिन इस बार वह आपके पास आएगा।'

'यह सब क्या है? कोई हमें दौड़ा कर मजे ले रहा है?' अंबिक ने चिढ़ते हुए कहा।

शौर्य ने थोड़ा सोचकर कहा, 'लेकिन कोई हमारे पीछे इतनी मेहनत क्यों कर रहा है? हमें क्या कहना चाहता है? उसने कहा कि हमें बहुत सारे खज़ाने मिल गए हैं और साथ ही यह भी कहा कि जर्नी की कीमत है।' शौर्य का दिमाग रहस्य खोज रहा था। 'हर जगह हमें एक स्टोरी मिली और प्रत्येक स्टोरी में एक ऐसी बात थी जो हमें हमेशा याद रहेगी।'

'नन्हें रेयांश ने अपनी सबसे पसंदीदा चीज़ एक भूखे बालक को दे दी। मिस्टर यादव ने अनपढ़ होने के बावजूद बच्चों के लिए स्कूल और लाइब्रेरी बनाई। अम्माजी ने खुद के बारे में सोचे बगैर दूसरे को दवा दे दी।' त्विशा हर एक स्टोरी याद करते हुए बोल रही थी।

'और सभी सुखी हुए!' शौर्य ने कहा।

‘यू आर राइट। किया किसी और के लिए और सुखी हुए खुद!’ अंबिक को बात उचित लगी।

तभी वह छोटा लड़का दौड़ते-दौड़ते इस तिकड़ी के पास आया और बोला, ‘आप लोग कहाँ थे? हम आपको कब से ढूँढ़ रहे थे।’

‘तुम फिर से आ गए? जाओ यहाँ से।’ त्विशा ने एकदम से उसे चुप कर दिया। वह नाराज होकर वहाँ से चला गया।
तभी कैम्प के हेड वहाँ से गुजरे।

‘अब तो हमारी खैर नहीं।’ उन लोगों ने सोचा। लेकिन, मानो कुछ हुआ ही न हो इस तरह इन लोगों को कुछ कहे बिना ही सर वहाँ से चले गए। क्या सर को सचमुच में पता नहीं चला था कि वे लोग सुबह से गायब थे! ऐसा कैसे हो सकता है?

कैम्प में कुछ तैयारी चल रही थी। थोड़ी देर बाद कैम्प फायर जलाया गया और सभी उसके आसपास बैठ गए। अंबिक, शौर्य और त्विशा भी वहाँ जाकर बैठ गए।

‘हेलो एवरीवन!’, कैम्प हेड ने कहा। दिन के अंत में भी सर एकदम फ्रेश लग रहे थे।

आज मैं तुम सबको एक कहानी सुनाने वाला हूँ। जिसका नाम है, ‘द अल्टिमेट गिफ्ट।’

‘गिफ्ट! क्या इसमें किसी को गिफ्ट मिलेगा?’ एक लड़की ने पूछा।

‘मिलेगा नहीं, लेकिन यह गिफ्ट हम सबको दे सकेंगे। तो सुनो...’

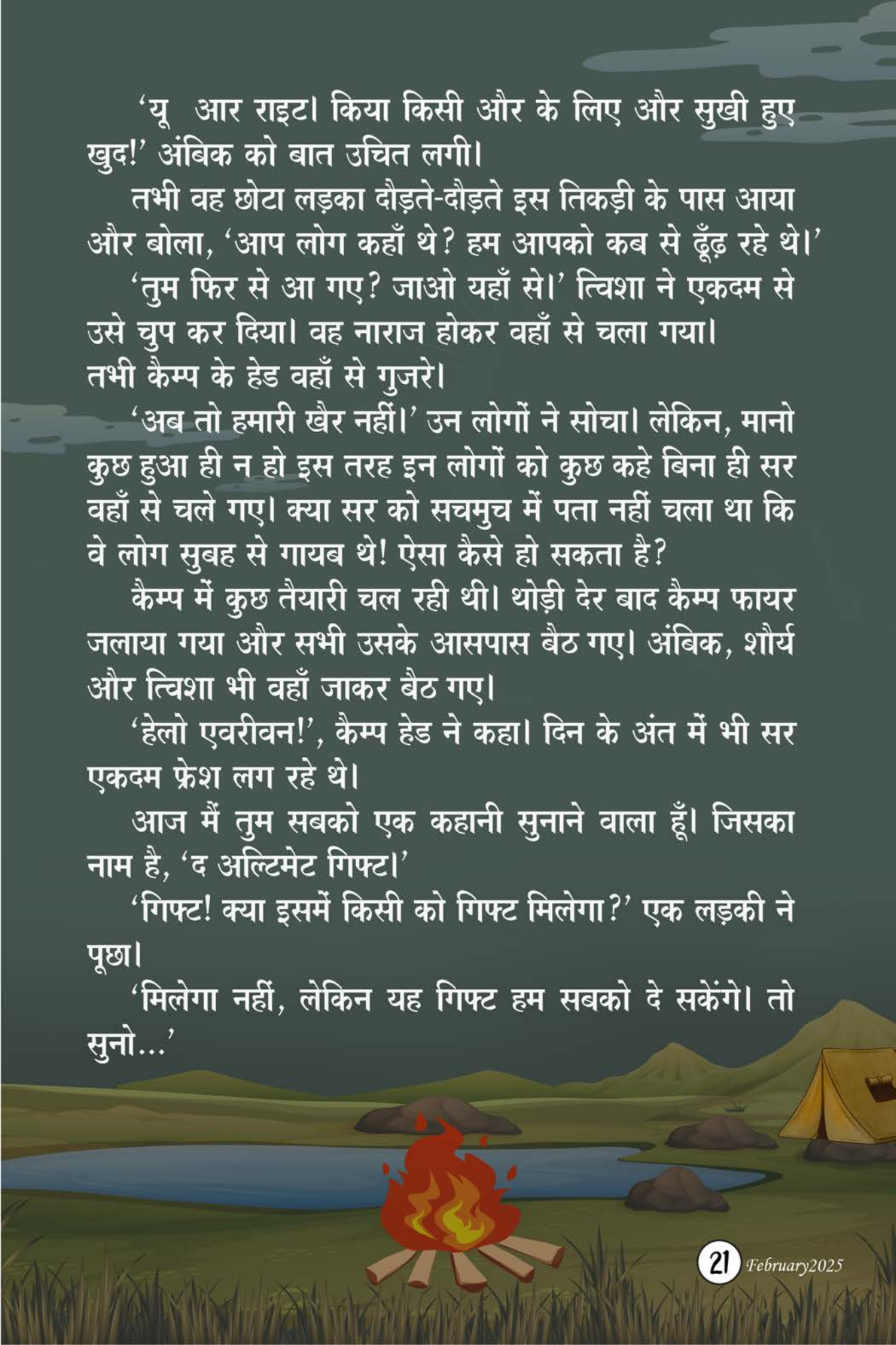

'द अल्टिमेट गिफ्ट'

ऑपरेशन थिएटर के बाहर रेड बल्ब जला। साहिल और उसकी मम्मी की घबराहट बहुत बढ़ गई। साहिल अपनी मम्मी की गोद में सिर रखकर जी भरकर रोना चाहता था। लेकिन मम्मी उससे मुँह फेरकर बैठी थीं।

अगर साहिल के कॉलेज के फ्रेन्ड्स उसे हास्पिटल में देखें तो शायद पहचान भी न पाएँ। वह लड़का जिसके नाम से लोग डर से काँप उठते हैं और जिसकी बातों से लोग हताश हो जाते हैं, वह आज इतना घबराया हुआ और खामोश कैसे हो सकता है!

साहिल के विचार उसके मन में युद्ध कर रहे थे, 'काश! पिछले दो घंटों को मैं अपनी लाइफ से डिलीट कर पाता। काश! मैंने ऐसा नहीं किया होता...' साहिल विचारों में खो गया।

कॉलेज से आकर रोज की तरह उसने मम्मी से कहा, 'दूध गरम कर दीजिए। मैं नहाकर आता हूँ।'

बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी। मम्मी ने दूध का ग्लास टेबल पर रखा, तभी डॉरबेल बजी।

साहिल का छोटा भाई सोहम बाहर से भीगकर आया था। मम्मी ने उसे टॉवेल से पोछा और साहिल के लिए रखा हुआ दूध का ग्लास सोहम को दिया, 'ये पी लो बेटा। साहिल के लिए दूसरा दूध बनाकर लाती हूँ।'

साहिल नहा कर आया। उसने सोहम को अपने दूध के ग्लास से दूध पीते हुए देखा तो उसका दिमाग गरम हो

गया। बिना कुछ सोचे उसने सोहम की कुर्सी को जोर से खींचा और चिल्लाया, 'यह मेरा दूध था।'

सोहम कुर्सी के साथ उल्टा गिर पड़ा और उसके सिर से खून बहने लगा। सोहम जोर से चीखा और मम्मी दौड़ती हुई रसोई से बाहर आई।

'यह तुमने क्या किया... !' सोहम की हालत देखकर मम्मी बहुत घबरा गई। साहिल भी बहुत डर गया।

आज तक साहिल ने लोगों को डराया-धमकाया था, लेकिन उसने कभी किसी को मारा या चोट नहीं पहुँचाई थी। आज पहली बार उसके छोटे भाई को उसके कारण जानलेवा चोट लगी थी। वह एकदम स्तब्ध होकर सोहम को देखता रह गया। मम्मी ने ऐम्बुलन्स को फोन किया और सोहम को हॉस्पिटल ले गए।

नर्स की आवाज़ से साहिल अपने विचारों से बाहर आया।

'हॉस्पिटल की कैन्टीन अभी खुली है। आप जाकर खाना खा लो।' नर्स ने धीमी आवाज़ में साहिल और उसकी मम्मी से कहा।

लेकिन भूख किसे थी? तभी ऑपरेशन थिएटर का दरवाजा खुला और दोनों एक साथ खड़े हो गए।

'सोहम अब खतरे से बाहर है। लेकिन उसका बहुत ध्यान रखना होगा।' डॉक्टर ने बाहर आकर कहा। साहिल फूट-फूटकर रोने लगा। अभी तक दबे हुए आँसुओं को बाहर आने का रास्ता मिल गया। आँसू पोछकर भर्राई हुई

आवाज़ में उसने कहा, 'यस डॉक्टर। मैं अपने छोटे भाई का बहुत ध्यान रखूँगा। अब उसे कुछ नहीं होने दूँगा।'

मम्मी साहिल को देखती रह गई। इस घटना से साहिल के जीवन में एक बड़ा परिवर्तन आ गया। साहिल ने अपने छोटे भाई का बहुत ध्यान रखा और मम्मी और सोहम का दिल जीत लिया।

'और बस, इस घटना के बाद साहिल ने तय किया कि अब कभी किसी को दुःख नहीं दूँगा।' सर ने कहानी समाप्त की।

'तो क्या उसने फिर कभी किसी को दुःख नहीं पहुँचाया?' एक बच्चे ने पूछा।

यह प्रश्न सुनकर सर थोड़ा सा मुस्कुराए और

कहा, 'हुआ यूँ कि पहले उसने जितने लोगों को दुःख दिया था वे लोग उसके विरोधी हो गए। वे उसे परेशान करने लगे। लेकिन साहिल ने जो निश्चय किया था उससे वह डिगा नहीं। कई बार कई लोगों को उससे दुःख हो जाता और आज भी हो जाता है। लेकिन वह पछतावा करता है और उसने जो निश्चय किया है उसे भूलता नहीं है।'

'सर, मतलब ऐसा करने से उसे कोई गिफ्ट मिला?' एक लड़की ने पूछा।

'उसे स्वयं कोई गिफ्ट नहीं मिला। लेकिन उसे समझ में आ गया कि सबसे कीमती गिफ्ट क्या है जो वह दूसरों को दे सकता है।' सर ने कहा।

'सर, वह कौनसा गिफ्ट है?'

'यही निश्चय कि किसी को दुःख नहीं देना है। बस, यही अल्टिमेट, यानी कि सर्वश्रेष्ठ गिफ्ट है। और यह गिफ्ट दूसरे छोटे बच्चों के साथ शेयर करने के लिए साहिल बड़ा होकर कैम्प ट्रेनर बन गया!' सर ने अपना सिर थोड़ा सा झुकाया और बच्चों को प्यारी सी स्माइल दी।

बच्चे समझ गए कि यह स्टोरी सर की खुद की ही है। सब ताली बजाने लगे।

'फ्रेन्ड्स, मोहनभाई मुझे पीछे से इशारा करके कह रहे हैं कि हॉट चॉकलेट तैयार है। हम सब उसे पीकर ही रूम में जाएँगे।' सर ने कहा।

पहली बार 'हॉट चॉकलेट' का नाम सुनकर त्विशा, अंबिक और शौर्य शांत रहे। तीनों कुछ सोच रहे थे। फिर त्विशा खड़ी होकर उस छोटे लड़के के पास गई। अंबिक और शौर्य भी उसके पीछे गए।

शौर्य ने उससे पूछा, 'तुम्हारा नाम ध्रुव है न?'

'हाँ', ध्रुव ने धीमी आवाज में कहा और तीनों की ओर नजरें उठाकर देखा। उसे पता नहीं चला कि अचानक वे तीनों उसके पास क्यों आए हैं।

'ध्रुव, सॉरी। हमने तुम्हें बहुत परेशान किया। लेकिन क्या तुम हमारे फ्रेन्ड बनोगे?' शौर्य ने पूछा।

ध्रुव कुछ बोल नहीं पाया। 'क्या हमारे साथ हॉट चॉकलेट पीने चलोगे?' अंबिक ने पूछा। ध्रुव झट से उनके साथ जाने के लिए खड़ा हो गया।

साहिल सर सभी को कप में हॉट चॉकलेट भरकर दे रहे थे। त्विशा, शौर्य और अंबिक को ध्रुव के साथ देखकर सर बहुत खुश हुए। तीनों का ध्यान सर के हाथ पर गया। सर के हाथ पर उस हरी स्याही का रंग देखकर तीनों चकित रह गए। यानी कि सर ने ही वे सब क्लू रखकर उन्हें भेजा था!

त्विशा, अंबिक और शौर्य के पास सर को कहने के लिए कोई शब्द नहीं थे। हॉट चॉकलेट का कप हाथ में लेकर तीनों ने सर को दिल से 'थैंक-यू' कहा।

सिंगिंग प्रैक्टिस में कोको का सॉन्ग सुनकर आलू ने उसकी बहुत तारीफ की और इससे चिली को बहुत दुःख हुआ है। वह एकदम मूडलेस होकर घर आ गया है। कॉम्पिटिशन की सुबह क्या हुआ, वह अब चिली का छोटा भाई पार्सली बताएगा।

पता है? चिली के कारण मैं पूरी रात सोया नहीं। वह पूरी रात अपने पंख हिलाता रहा और सुबह उठने के टाइम पर खर्राटे लेकर सो गया। बोलो! आज उसका कॉम्पिटिशन है और रियाज़ करने के बदले वह सो रहा है। हाँलाकि, वह इतना अच्छा गाता है कि ज़रूर जीतेगा। मैंने भी उसे सॉन्ग गाकर जगाने का तय किया।

जागते ही मुझसे कुछ कहे बिना वह जल्दी से रेडी होने लगा। मैं उसके लिए आलू भैया द्वारा दी हुई 'बेस्ट सिंगर' वाली बॉटल भर रहा था, तभी वहाँ आलू भैया भी आ गए। मैंने उनसे कह ही डाला कि "अभी तो आप चिली को 'बेस्ट सिंगर' कहते हो, लेकिन जब मैं भी सिंगिंग शुरु करूँगा तब आप 'बेस्ट सिंगर' किसे कहोगे?" यह सुनकर आलू भैया का चेहरा ऐसा हो गया मानो उनके लड्डू में मक्खी गिर गई हो। मेरे सिंगिंग की बात सुनकर पता नहीं क्यों मम्मी भी मुझे कहने लगीं, 'बेटा पार्सली, तुम हवा में गुलाटी मारने में बेस्ट हो, तुम सिंगिंग रहने दो।' मैं और कुछ कहता उससे पहले वहाँ चिली आ गया।

बोलो! उसने मुझे पूरी रात सोने नहीं दिया और चेहरा उसका ऐसा लग रहा था मानो मैंने उसे पंख से मारा हो।

और आलू भैया को देखकर खुश होने के बजाय वह बोला, 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हें तो कोको के घर जाना चाहिए था, वह तुम्हारा बेस्ट फ्रेन्ड है न!'

यह बात सुनकर मैं उलझन में पड़ गया। मुझे तो किसी ने बताया ही नहीं कि आलू भैया और कोको बेस्ट फ्रेन्ड्स हैं। मैं तो छोटा था तब से मुझे ऐसा ही लगता था कि आलू भैया और चिली बेस्ट फ्रेन्ड हैं। इसीलिए तो उन्होंने 'बेस्ट सिंगर' वाली बॉटल चिली को दी थी। आलू भैया ने एक बड़ी स्माइल देकर चिली से कहा, 'आज तुम जीतो या हारो, हम कॉम्पिटिशन के बाद पार्टी करेंगे। और आज से आलू शेक फिर से आलू-चिली शेक हो जाएगा!!' मैंने भी तय किया है, मैं भी आलू भैया जैसा ही बेस्ट फ्रेन्ड बनाऊँगा। जो हार-जीत में हमेशा मेरे साथ रहे।

"हाँ बेटा, हमारे लिए तो तुम 'बेस्ट सिंगर' हो और हमेशा रहोगे!" मम्मी ने चिली को गले लगाकर कहा। और चिली रोने लगा। और रोते-रोते मम्मी को 'थुं थुं बबी' कहने लगा। मुझे लगता है कि मेरे भाई चिली को कभी रोना नहीं चाहिए। क्योंकि वह रोता है तो उसके नाक और आँख में से इतना पानी निकलता है कि वह क्या बोल रहा है, वह आलू भैया के सिवाय कोई नहीं समझ पाता है।

मैंने आलू भैया के सामने देखा तो उन्होंने मुझसे कहा कि 'थैंक यू, मम्मी!' ऐसा चिली कह रहा है। लेकिन मुझे तो यह समझ में नहीं आ रहा है कि वह रो क्यों रहा है?

आपको क्या लगता है? चिली को नींद क्यों नहीं आई? वह क्यों रो पड़ा? वह आलू के साथ ऐसे क्यों बात कर रहा है?

फ्री
डाउनलोड

अक्रम एक्सप्रेस

कहानियाँ हैं नई-नई
और ऐक्टिविटीज़ बहुत सारी
मिलेगी अब उँगली पर आपकी
अक्रम एक्सप्रेस आ गया है अब डिजिटली...

तो आज ही प्राप्त करें अपनी फेवरिट
अक्रम एक्सप्रेस मैगज़ीन

https://kids.dadabhagwan.org/knowledge-house/magazines/

और हाँ, अपने फ्रेन्ड्स और फैमिली के
साथ शेयर करना न भूलें।

DBF • अडालज